kashish

AVNEET

Model: Web-Milan-Phal

Order No: 121083301

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
13/10/1998	जन्म तिथि	11/11/1998
मंगलवार	दिन	बुधवार
घंटे 22:30:00	जन्म समय	11:10:00 घंटे
घटी 40:12:10	जन्म समय(घटी)	10:58:20 घटी
India	देश	India
Patiala	स्थान	Gzb
30:20:23 उत्तर	अक्षांश	28:40:08 उत्तर
76:23:12 पूर्व	रेखांश	77:27:13 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:24:27	स्थानिक संस्कार	-00:20:11 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:25:08	सूर्योदय	06:39:41
17:56:05	सूर्यास्त	17:28:36
23:50:14	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:17

मिथुन	लग्न	धनु
बुध	लग्न लग्नाधिपति	गुरु
कर्क	राशि	कर्क
चन्द्र	राशि-स्वामी	चन्द्र
पुष्य	नक्षत्र	आश्लेषा
शनि	नक्षत्र स्वामी	बुध
3	चरण	4
सिद्ध	योग	ब्रह्म
गर	करण	कौलव
हो-होशियार	जन्म नामाक्षर	डो-डौली
तुला	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृश्चिक
विप्र	वर्ण	विप्र
जलचर	वश्य	जलचर
मेष	योनि	मार्जार
देव	गण	राक्षस
मध्य	नाड़ी	अन्त्य
मेष	वर्ग	श्वान

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शनि 7वर्ष 7मा 15दि		13:30:02	मिथु	लग्न	धनु	24:22:32	बुध 3वर्ष 5मा 2दि	
केतु		26:18:52	कन्या	सूर्य	तुला	24:46:58	शुक्र	
30/05/2023		11:18:57	कर्क	चंद्र	कर्क	27:18:51	15/04/2009	
29/05/2030		09:56:12	सिंह	मंगल	सिंह	26:54:30	15/04/2029	
केतु	26/10/2023	08:39:49	तुला	बुध	वृश्चि	17:34:25	शुक्र	14/08/2012
शुक्र	25/12/2024	25:53:19	कुंभ व	गुरु व	कुंभ	24:19:56	सूर्य	14/08/2013
सूर्य	02/05/2025	22:04:20	कन्या	शुक्र	तुला	27:49:22	चन्द्र	15/04/2015
चन्द्र	01/12/2025	07:07:14	मेष व	शनि व	मेष	04:53:34	मंगल	14/06/2016
मंगल	29/04/2026	06:30:50	सिंह	राहु	सिंह	03:58:25	राहु	15/06/2019
राहु	17/05/2027	06:30:50	कुंभ	केतु	कुंभ	03:58:25	गुरु	13/02/2022
गुरु	22/04/2028	14:59:01	मक व	हर्ष	मक	15:12:14	शनि	15/04/2025
शनि	01/06/2029	05:32:53	मक	नेप	मक	05:48:27	बुध	13/02/2028
बुध	29/05/2030	12:22:18	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	13:20:34	केतु	15/04/2029

23:50:14 चित्रपक्षीय अयनांश 23:50:17

लग्न-चलित

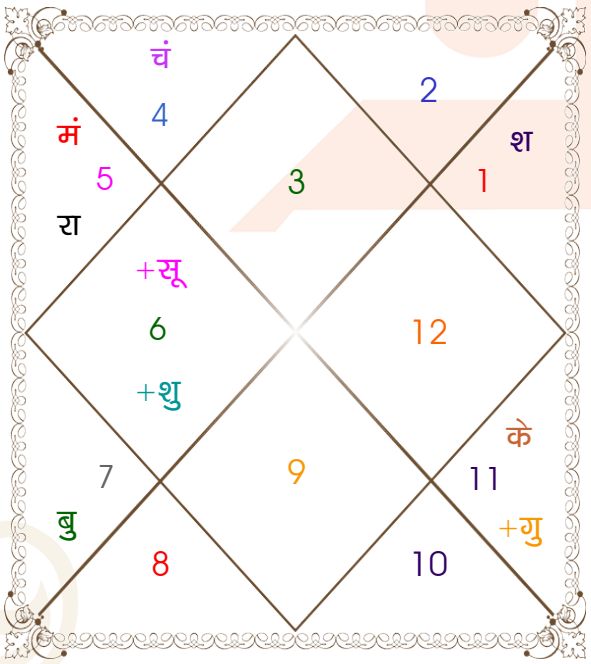

लग्न-चलित

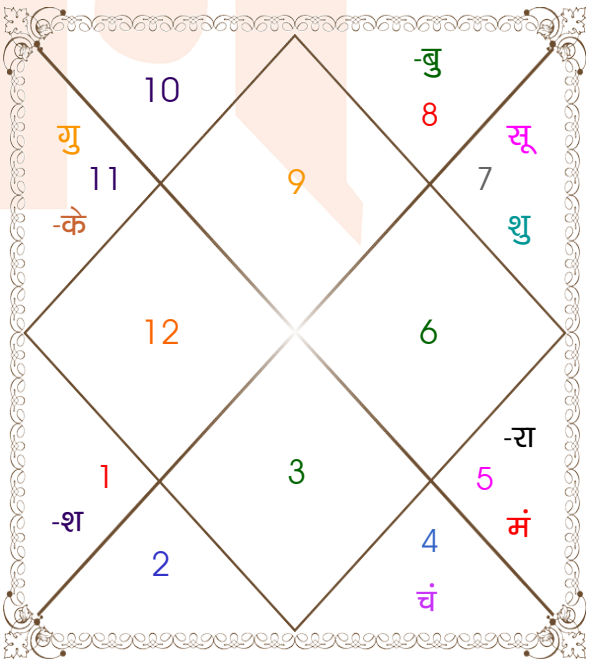

चन्द्र कुंडली

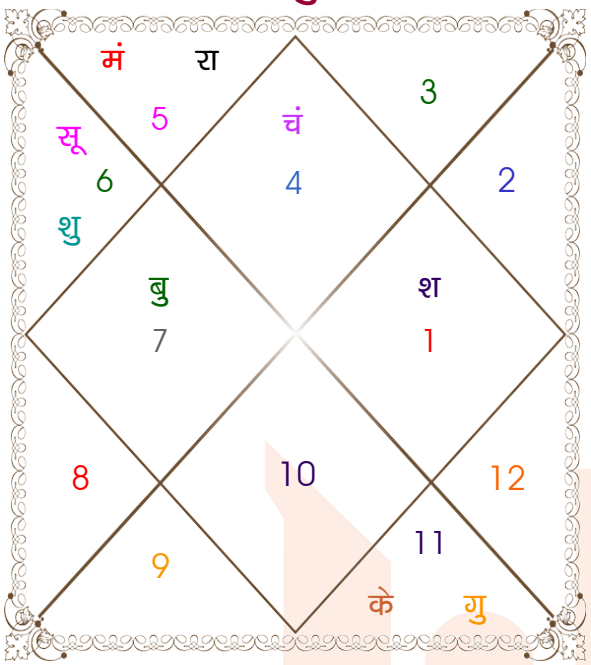

चन्द्र कुंडली

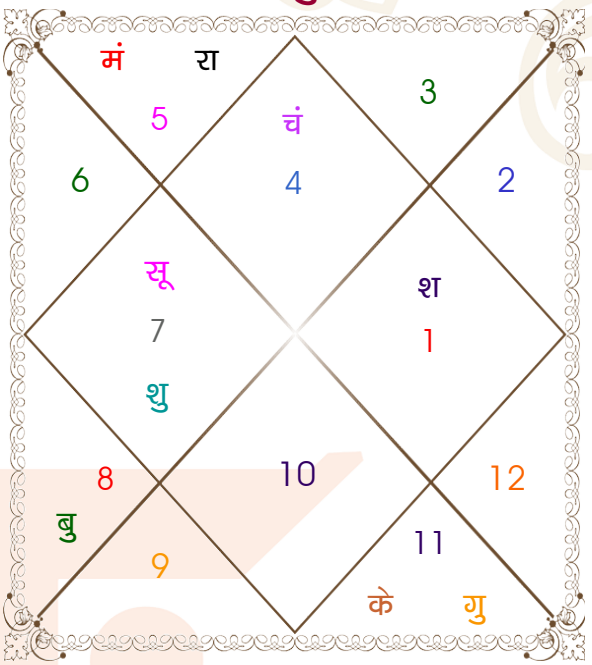

नवमांश कुंडली

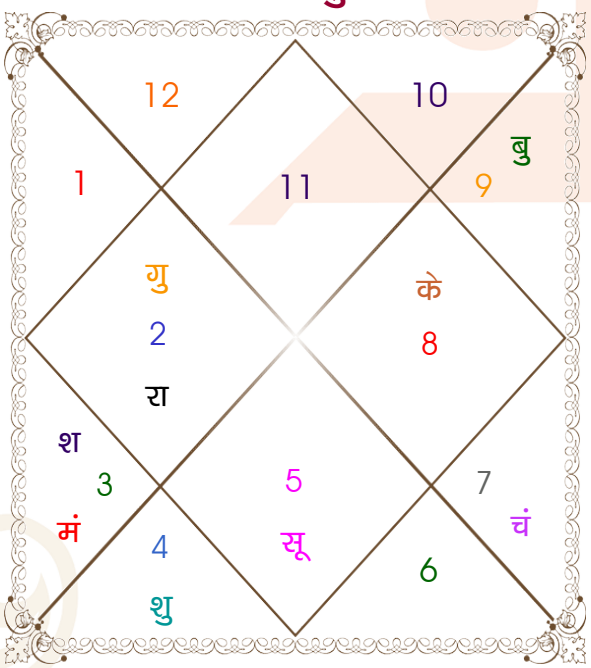

नवमांश कुंडली

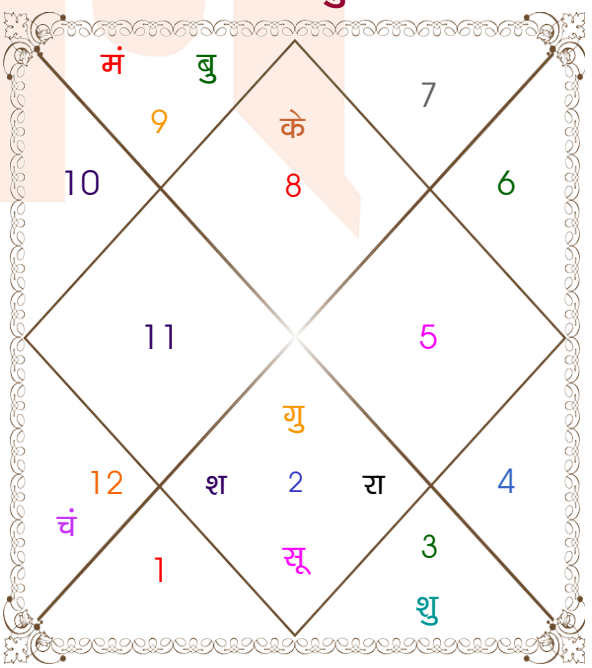

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शनि 7 वर्ष 5 मास 23 दिन

के.पी. अयनांश : 23:44:09

फॉरच्युना : मीन 28:36:12

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कन्या	26:24:57	बुध	मंगल	गुरु	शनि
चंद्र		कर्क	11:25:02	चंद्र	शनि	चंद्र	गुरु
मंगल		सिंह	10:02:17	सूर्य	केतु	शनि	केतु
बुध		तुला	08:45:54	शुक्र	राहु	गुरु	गुरु
गुरु	व	कुंभ	25:59:24	शनि	गुरु	केतु	सूर्य
शुक्र		कन्या	22:10:25	बुध	चंद्र	शुक्र	शनि
शनि	व	मेष	07:13:19	मंगल	केतु	राहु	सूर्य
राहु		सिंह	06:36:55	सूर्य	केतु	राहु	बुध
केतु		कुंभ	06:36:55	शनि	मंगल	चंद्र	सूर्य
हर्ष	व	मक	15:05:06	शनि	चंद्र	गुरु	सूर्य
नेप		मक	05:38:58	शनि	सूर्य	बुध	शुक्र
प्लूटो		वृश्चि	12:28:23	मंगल	शनि	मंगल	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मिथु	13:36:07	बुध	राहु	बुध	मंगल
2	कर्क	05:50:34	चंद्र	शनि	बुध	शुक्र
3	सिंह	00:05:19	सूर्य	केतु	केतु	शुक्र
4	सिंह	29:06:48	सूर्य	सूर्य	मंगल	शुक्र
5	तुला	03:45:44	शुक्र	मंगल	शुक्र	राहु
6	वृश्चि	10:19:44	मंगल	शनि	शुक्र	केतु
7	धनु	13:36:07	गुरु	शुक्र	शुक्र	शुक्र
8	मक	05:50:34	शनि	सूर्य	बुध	सूर्य
9	कुंभ	00:05:19	शनि	मंगल	बुध	बुध
10	कुंभ	29:06:48	शनि	गुरु	सूर्य	शनि
11	मेष	03:45:44	मंगल	केतु	चंद्र	मंगल
12	वृष	10:19:44	शुक्र	चंद्र	चंद्र	गुरु

भाव कुंडली

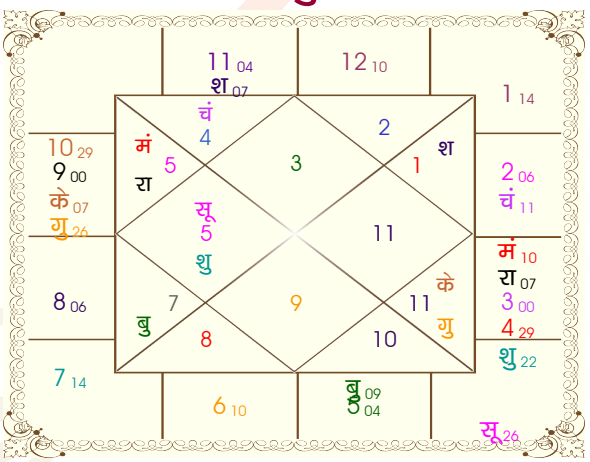

भोग्य दशा काल : बुध 3 वर्ष 3 मास 16 दिन

के.पी. अयनांश : 23:44:13

फॉरच्युना : कन्या 27:00:29

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		तुला	24:53:02	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल
चंद्र		कर्क	27:24:55	चंद्र	बुध	गुरु	चंद्र
मंगल		सिंह	27:00:34	सूर्य	सूर्य	सूर्य	शनि
बुध		वृश्चि	17:40:30	मंगल	बुध	बुध	मंगल
गुरु	व	कुंभ	24:26:00	शनि	गुरु	बुध	शुक्र
शुक्र		तुला	27:55:26	शुक्र	गुरु	शुक्र	गुरु
शनि	व	मेष	04:59:38	मंगल	केतु	मंगल	गुरु
राहु		सिंह	04:04:29	सूर्य	केतु	चंद्र	गुरु
केतु		कुंभ	04:04:29	शनि	मंगल	शुक्र	गुरु
हर्ष		मक	15:18:18	शनि	चंद्र	गुरु	मंगल
नेप		मक	05:54:31	शनि	सूर्य	बुध	चंद्र
प्लूटो		वृश्चि	13:26:38	मंगल	शनि	राहु	गुरु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	धनु	24:28:36	गुरु	शुक्र	बुध	शुक्र
2	कुंभ	01:46:56	शनि	मंगल	बुध	शनि
3	मीन	09:22:12	गुरु	शनि	शुक्र	गुरु
4	मेष	11:10:06	मंगल	केतु	शनि	गुरु
5	वृष	07:08:11	शुक्र	सूर्य	केतु	शुक्र
6	मिथु	00:19:59	बुध	मंगल	बुध	केतु
7	मिथु	24:28:36	बुध	गुरु	बुध	शुक्र
8	सिंह	01:46:56	सूर्य	केतु	शुक्र	राहु
9	कन्या	09:22:12	बुध	सूर्य	शुक्र	शनि
10	तुला	11:10:06	शुक्र	राहु	शनि	केतु
11	वृश्चि	07:08:11	मंगल	शनि	बुध	शनि
12	धनु	00:19:59	गुरु	केतु	केतु	राहु

भाव कुंडली

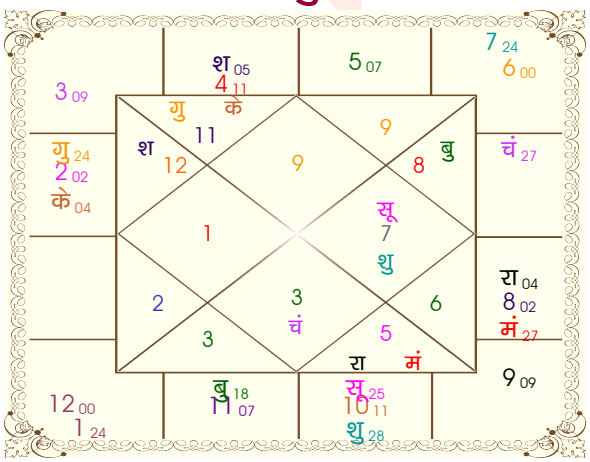

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	बुध-
2	चंद्र, शुक्र+
3	सूर्य+ मंगल, बुध, राहु, केतु,
4	सूर्य, शुक्र,
5	बुध, शुक्र-
6	सूर्य- मंगल- केतु-
7	गुरु,
8	चंद्र- शनि-
9	चंद्र- मंगल, गुरु+ शनि+ राहु, केतु,
10	चंद्र- शनि-
11	सूर्य- चंद्र, मंगल- शनि, केतु-
12	शुक्र-

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- गुरु, शुक्र-
2	सूर्य, गुरु+ शुक्र, शनि+ राहु, केतु,
3	सूर्य- गुरु, शुक्र- शनि,
4	मंगल- केतु-
5	शुक्र-
6	चंद्र- बुध,
7	चंद्र+ बुध,
8	सूर्य- मंगल+ राहु, केतु,
9	चंद्र- बुध,
10	सूर्य, मंगल, शुक्र,
11	चंद्र, मंगल- बुध+ केतु-
12	सूर्य- गुरु, शुक्र-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3+ 4, 6- 11-
चंद्र	2, 8- 9- 10- 11,
मंगल	3, 6- 9, 11-
बुध	1- 3, 5,
गुरु	7, 9+
शुक्र	2+ 4, 5- 12-
शनि	8- 9+ 10- 11,
राहु	3, 9,
केतु	3, 6- 9, 11-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 2, 3- 8- 10, 12-
चंद्र	6- 7+ 9- 11,
मंगल	4- 8+ 10, 11-
बुध	6, 7, 9, 11+
गुरु	1, 2+ 3, 12,
शुक्र	1- 2, 3- 5- 10, 12-
शनि	2+ 3,
राहु	2, 8,
केतु	2, 4- 8, 11-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	राहु
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	शनि
राशि स्वामी	चन्द्र
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	चन्द्र

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शुक्र
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	बुध
राशि स्वामी	चन्द्र
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

विंशोत्तरी दशा

शनि 7 वर्ष 7 मास 15 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
13/10/1998	29/05/2006	30/05/2023
29/05/2006	30/05/2023	29/05/2030
00/00/0000	बुध 25/10/2008	केतु 26/10/2023
00/00/0000	केतु 22/10/2009	शुक्र 25/12/2024
00/00/0000	शुक्र 22/08/2012	सूर्य 02/05/2025
00/00/0000	सूर्य 29/06/2013	चंद्र 01/12/2025
13/10/1998	चंद्र 28/11/2014	मंगल 29/04/2026
चंद्र 01/12/1999	मंगल 25/11/2015	राहु 17/05/2027
मंगल 09/01/2001	राहु 14/06/2018	गुरु 22/04/2028
राहु 16/11/2003	गुरु 18/09/2020	शनि 01/06/2029
गुरु 29/05/2006	शनि 30/05/2023	बुध 29/05/2030

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
29/05/2030	29/05/2050	29/05/2056
29/05/2050	29/05/2056	29/05/2066
शुक्र 28/09/2033	सूर्य 16/09/2050	चंद्र 29/03/2057
सूर्य 28/09/2034	चंद्र 18/03/2051	मंगल 28/10/2057
चंद्र 29/05/2036	मंगल 23/07/2051	राहु 29/04/2059
मंगल 29/07/2037	राहु 16/06/2052	गुरु 28/08/2060
राहु 29/07/2040	गुरु 04/04/2053	शनि 30/03/2062
गुरु 30/03/2043	शनि 17/03/2054	बुध 29/08/2063
शनि 29/05/2046	बुध 22/01/2055	केतु 29/03/2064
बुध 29/03/2049	केतु 30/05/2055	शुक्र 28/11/2065
केतु 29/05/2050	शुक्र 29/05/2056	सूर्य 29/05/2066

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
29/05/2066	29/05/2073	30/05/2091
29/05/2073	30/05/2091	31/05/2107
मंगल 26/10/2066	राहु 09/02/2076	गुरु 17/07/2093
राहु 13/11/2067	गुरु 05/07/2078	शनि 28/01/2096
गुरु 19/10/2068	शनि 11/05/2081	बुध 05/05/2098
शनि 28/11/2069	बुध 28/11/2083	केतु 11/04/2099
बुध 25/11/2070	केतु 16/12/2084	शुक्र 11/12/2101
केतु 23/04/2071	शुक्र 17/12/2087	सूर्य 29/09/2102
शुक्र 22/06/2072	सूर्य 09/11/2088	चंद्र 29/01/2104
सूर्य 28/10/2072	चंद्र 11/05/2090	मंगल 04/01/2105
चंद्र 29/05/2073	मंगल 30/05/2091	राहु 31/05/2107

बुध 3 वर्ष 5 मास 2 दिन

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
11/11/1998	15/04/2002	15/04/2009
15/04/2002	15/04/2009	15/04/2029
00/00/0000	केतु 11/09/2002	शुक्र 14/08/2012
00/00/0000	शुक्र 11/11/2003	सूर्य 14/08/2013
00/00/0000	सूर्य 18/03/2004	चंद्र 15/04/2015
00/00/0000	चंद्र 17/10/2004	मंगल 14/06/2016
00/00/0000	मंगल 15/03/2005	राहु 15/06/2019
00/00/0000	राहु 03/04/2006	गुरु 13/02/2022
11/11/1998	गुरु 10/03/2007	शनि 15/04/2025
गुरु 06/08/1999	शनि 17/04/2008	बुध 13/02/2028
शनि 15/04/2002	बुध 15/04/2009	केतु 15/04/2029

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
15/04/2029	15/04/2035	15/04/2045
15/04/2035	15/04/2045	14/04/2052
सूर्य 02/08/2029	चंद्र 13/02/2036	मंगल 11/09/2045
चंद्र 01/02/2030	मंगल 13/09/2036	राहु 29/09/2046
मंगल 09/06/2030	राहु 15/03/2038	गुरु 05/09/2047
राहु 03/05/2031	गुरु 15/07/2039	शनि 14/10/2048
गुरु 20/02/2032	शनि 13/02/2041	बुध 11/10/2049
शनि 01/02/2033	बुध 15/07/2042	केतु 09/03/2050
बुध 08/12/2033	केतु 13/02/2043	शुक्र 09/05/2051
केतु 15/04/2034	शुक्र 14/10/2044	सूर्य 14/09/2051
शुक्र 15/04/2035	सूर्य 15/04/2045	चंद्र 14/04/2052

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
14/04/2052	15/04/2070	15/04/2086
15/04/2070	15/04/2086	16/04/2105
राहु 26/12/2054	गुरु 02/06/2072	शनि 18/04/2089
गुरु 21/05/2057	शनि 14/12/2074	बुध 27/12/2091
शनि 27/03/2060	बुध 21/03/2077	केतु 04/02/2093
बुध 14/10/2062	केतु 25/02/2078	शुक्र 05/04/2096
केतु 02/11/2063	शुक्र 26/10/2080	सूर्य 18/03/2097
शुक्र 02/11/2066	सूर्य 14/08/2081	चंद्र 17/10/2098
सूर्य 26/09/2067	चंद्र 14/12/2082	मंगल 26/11/2099
चंद्र 27/03/2069	मंगल 20/11/2083	राहु 03/10/2102
मंगल 15/04/2070	राहु 15/04/2086	गुरु 16/04/2105

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु	
01/12/2025		29/04/2026		17/05/2027	
29/04/2026		17/05/2027		22/04/2028	
मंगल	09/12/2025	राहु	25/06/2026	गुरु	02/07/2027
राहु	01/01/2026	गुरु	16/08/2026	शनि	25/08/2027
गुरु	21/01/2026	शनि	15/10/2026	बुध	12/10/2027
शनि	13/02/2026	बुध	09/12/2026	केतु	01/11/2027
बुध	06/03/2026	केतु	31/12/2026	शुक्र	28/12/2027
केतु	15/03/2026	शुक्र	05/03/2027	सूर्य	14/01/2028
शुक्र	09/04/2026	सूर्य	24/03/2027	चंद्र	11/02/2028
सूर्य	17/04/2026	चंद्र	25/04/2027	मंगल	02/03/2028
चंद्र	29/04/2026	मंगल	17/05/2027	राहु	22/04/2028

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
15/04/2025		13/02/2028		15/04/2029	
13/02/2028		15/04/2029		02/08/2029	
बुध	08/09/2025	केतु	09/03/2028	सूर्य	20/04/2029
केतु	08/11/2025	शुक्र	19/05/2028	चंद्र	29/04/2029
शुक्र	29/04/2026	सूर्य	10/06/2028	मंगल	06/05/2029
सूर्य	20/06/2026	चंद्र	15/07/2028	राहु	22/05/2029
चंद्र	14/09/2026	मंगल	09/08/2028	गुरु	06/06/2029
मंगल	13/11/2026	राहु	12/10/2028	शनि	23/06/2029
राहु	18/04/2027	गुरु	08/12/2028	बुध	08/07/2029
गुरु	03/09/2027	शनि	13/02/2029	केतु	15/07/2029
शनि	13/02/2028	बुध	15/04/2029	शुक्र	02/08/2029

केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
22/04/2028		01/06/2029		29/05/2030	
01/06/2029		29/05/2030		28/09/2033	
शनि	25/06/2028	बुध	22/07/2029	शुक्र	18/12/2030
बुध	22/08/2028	केतु	13/08/2029	सूर्य	17/02/2031
केतु	14/09/2028	शुक्र	12/10/2029	चंद्र	30/05/2031
शुक्र	21/11/2028	सूर्य	30/10/2029	मंगल	09/08/2031
सूर्य	11/12/2028	चंद्र	29/11/2029	राहु	07/02/2032
चंद्र	14/01/2029	मंगल	20/12/2029	गुरु	19/07/2032
मंगल	06/02/2029	राहु	13/02/2030	शनि	27/01/2033
राहु	08/04/2029	गुरु	02/04/2030	बुध	19/07/2033
गुरु	01/06/2029	शनि	29/05/2030	केतु	28/09/2033

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु	
02/08/2029		01/02/2030		09/06/2030	
01/02/2030		09/06/2030		03/05/2031	
चंद्र	17/08/2029	मंगल	08/02/2030	राहु	28/07/2030
मंगल	28/08/2029	राहु	27/02/2030	गुरु	10/09/2030
राहु	24/09/2029	गुरु	16/03/2030	शनि	01/11/2030
गुरु	19/10/2029	शनि	06/04/2030	बुध	17/12/2030
शनि	17/11/2029	बुध	24/04/2030	केतु	06/01/2031
बुध	13/12/2029	केतु	01/05/2030	शुक्र	01/03/2031
केतु	23/12/2029	शुक्र	23/05/2030	सूर्य	18/03/2031
शुक्र	23/01/2030	सूर्य	29/05/2030	चंद्र	14/04/2031
सूर्य	01/02/2030	चंद्र	09/06/2030	मंगल	03/05/2031

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
28/09/2033		28/09/2034		29/05/2036	
28/09/2034		29/05/2036		29/07/2037	
सूर्य	16/10/2033	चंद्र	18/11/2034	मंगल	23/06/2036
चंद्र	16/11/2033	मंगल	23/12/2034	राहु	26/08/2036
मंगल	07/12/2033	राहु	25/03/2035	गुरु	21/10/2036
राहु	31/01/2034	गुरु	14/06/2035	शनि	28/12/2036
गुरु	20/03/2034	शनि	18/09/2035	बुध	26/02/2037
शनि	17/05/2034	बुध	13/12/2035	केतु	23/03/2037
बुध	08/07/2034	केतु	18/01/2036	शुक्र	02/06/2037
केतु	29/07/2034	शुक्र	28/04/2036	सूर्य	23/06/2037
शुक्र	28/09/2034	सूर्य	29/05/2036	चंद्र	29/07/2037

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
03/05/2031		20/02/2032		01/02/2033	
20/02/2032		01/02/2033		08/12/2033	
गुरु	11/06/2031	शनि	14/04/2032	बुध	16/03/2033
शनि	28/07/2031	बुध	03/06/2032	केतु	04/04/2033
बुध	07/09/2031	केतु	23/06/2032	शुक्र	25/05/2033
केतु	24/09/2031	शुक्र	20/08/2032	सूर्य	10/06/2033
शुक्र	12/11/2031	सूर्य	06/09/2032	चंद्र	06/07/2033
सूर्य	26/11/2031	चंद्र	05/10/2032	मंगल	24/07/2033
चंद्र	21/12/2031	मंगल	25/10/2032	राहु	08/09/2033
मंगल	07/01/2032	राहु	16/12/2032	गुरु	20/10/2033
राहु	20/02/2032	गुरु	01/02/2033	शनि	08/12/2033

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
29/07/2037		29/07/2040		30/03/2043	
29/07/2040		30/03/2043		29/05/2046	
राहु	09/01/2038	गुरु	06/12/2040	शनि	29/09/2043
गुरु	04/06/2038	शनि	09/05/2041	बुध	11/03/2044
शनि	25/11/2038	बुध	24/09/2041	केतु	17/05/2044
बुध	29/04/2039	केतु	20/11/2041	शुक्र	26/11/2044
केतु	02/07/2039	शुक्र	01/05/2042	सूर्य	23/01/2045
शुक्र	01/01/2040	सूर्य	19/06/2042	चंद्र	29/04/2045
सूर्य	25/02/2040	चंद्र	08/09/2042	मंगल	06/07/2045
चंद्र	26/05/2040	मंगल	04/11/2042	राहु	26/12/2045
मंगल	29/07/2040	राहु	30/03/2043	गुरु	29/05/2046

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
08/12/2033		15/04/2034		15/04/2035	
15/04/2034		15/04/2035		13/02/2036	
केतु	15/12/2033	शुक्र	15/06/2034	चंद्र	10/05/2035
शुक्र	06/01/2034	सूर्य	03/07/2034	मंगल	28/05/2035
सूर्य	12/01/2034	चंद्र	02/08/2034	राहु	13/07/2035
चंद्र	23/01/2034	मंगल	24/08/2034	गुरु	22/08/2035
मंगल	30/01/2034	राहु	17/10/2034	शनि	10/10/2035
राहु	18/02/2034	गुरु	05/12/2034	बुध	22/11/2035
गुरु	07/03/2034	शनि	01/02/2035	केतु	09/12/2035
शनि	28/03/2034	बुध	25/03/2035	शुक्र	29/01/2036
बुध	15/04/2034	केतु	15/04/2035	सूर्य	13/02/2036

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
29/05/2046		29/03/2049		29/05/2050	
29/03/2049		29/05/2050		16/09/2050	
बुध	23/10/2046	केतु	23/04/2049	सूर्य	04/06/2050
केतु	22/12/2046	शुक्र	03/07/2049	चंद्र	13/06/2050
शुक्र	13/06/2047	सूर्य	24/07/2049	मंगल	19/06/2050
सूर्य	04/08/2047	चंद्र	29/08/2049	राहु	06/07/2050
चंद्र	29/10/2047	मंगल	23/09/2049	गुरु	20/07/2050
मंगल	28/12/2047	राहु	26/11/2049	शनि	07/08/2050
राहु	31/05/2048	गुरु	22/01/2050	बुध	22/08/2050
गुरु	16/10/2048	शनि	30/03/2050	केतु	29/08/2050
शनि	29/03/2049	बुध	29/05/2050	शुक्र	16/09/2050

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
13/02/2036		13/09/2036		15/03/2038	
13/09/2036		15/03/2038		15/07/2039	
मंगल	26/02/2036	राहु	05/12/2036	गुरु	19/05/2038
राहु	29/03/2036	गुरु	16/02/2037	शनि	04/08/2038
गुरु	26/04/2036	शनि	13/05/2037	बुध	12/10/2038
शनि	30/05/2036	बुध	30/07/2037	केतु	10/11/2038
बुध	29/06/2036	केतु	31/08/2037	शुक्र	30/01/2039
केतु	12/07/2036	शुक्र	30/11/2037	सूर्य	23/02/2039
शुक्र	16/08/2036	सूर्य	28/12/2037	चंद्र	05/04/2039
सूर्य	27/08/2036	चंद्र	11/02/2038	मंगल	03/05/2039
चंद्र	13/09/2036	मंगल	15/03/2038	राहु	15/07/2039

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु	
16/09/2050		18/03/2051		23/07/2051	
18/03/2051		23/07/2051		16/06/2052	
चंद्र	01/10/2050	मंगल	25/03/2051	राहु	11/09/2051
मंगल	12/10/2050	राहु	13/04/2051	गुरु	25/10/2051
राहु	08/11/2050	गुरु	30/04/2051	शनि	16/12/2051
गुरु	03/12/2050	शनि	20/05/2051	बुध	31/01/2052
शनि	31/12/2050	बुध	08/06/2051	केतु	19/02/2052
बुध	26/01/2051	केतु	15/06/2051	शुक्र	14/04/2052
केतु	06/02/2051	शुक्र	06/07/2051	सूर्य	01/05/2052
शुक्र	08/03/2051	सूर्य	13/07/2051	चंद्र	28/05/2052
सूर्य	18/03/2051	चंद्र	23/07/2051	मंगल	16/06/2052

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
15/07/2039		13/02/2041		15/07/2042	
13/02/2041		15/07/2042		13/02/2043	
शनि	15/10/2039	बुध	27/04/2041	केतु	28/07/2042
बुध	05/01/2040	केतु	27/05/2041	शुक्र	01/09/2042
केतु	08/02/2040	शुक्र	21/08/2041	सूर्य	12/09/2042
शुक्र	14/05/2040	सूर्य	16/09/2041	चंद्र	29/09/2042
सूर्य	12/06/2040	चंद्र	29/10/2041	मंगल	12/10/2042
चंद्र	30/07/2040	मंगल	29/11/2041	राहु	13/11/2042
मंगल	02/09/2040	राहु	14/02/2042	गुरु	11/12/2042
राहु	28/11/2040	गुरु	24/04/2042	शनि	14/01/2043
गुरु	13/02/2041	शनि	15/07/2042	बुध	13/02/2043

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

4	मूलांक	2
5	भाग्यांक	4
1, 4, 6, 5	मित्र अंक	2, 7, 8, 4
3, 7, 8	शत्रु अंक	5, 6
22,31,40,49,58	शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
बुध, शुक्र, शनि	शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
बुध, शुक्र, शनि	शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मीन, मेष	मित्र राशि	मीन, मेष
कन्या, कुम्भ, मेष	मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
शिव	अनुकूल देवता	शिव
पन्ना	शुभ रत्न	पुखराज
संगपन्ना, मरगज	शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
नीलम	भाग्य रत्न	माणिक्य
कांसा	शुभ धातु	कांसा
हरित	शुभ रंग	पीत
उत्तर	शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
सूर्योदय के बाद	शुभ समय	संध्या
हाथी दाँत, कपूर, फल	दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
मूँग	दान अन्न	दाल चना
घी	दान द्रव्य	घी

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री - kashish

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	सम
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	सम	सम	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	सम	---	सम	सम
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

पंचधा मैत्री - AVNEET

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	सम
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	सम	सम	सम	सम	---	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	सम	---	सम	सम
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

kashish

जीवन रत्नः	पन्ना	सन्तति सुख, स्वास्थ्य, सुख
भाग्य रत्नः	नीलम	धनार्जन, दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
कारक रत्नः	हीरा	सुख, कम खर्च, सन्तति सुख

AVNEET

जीवन रत्नः	पुखराज	पराक्रम, स्वास्थ्य, सुख
भाग्य रत्नः	माणिक्य	धनार्जन, भाग्योदय
कारक रत्नः	मूंगा	भाग्योदय, सन्तति सुख, कम खर्च

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	22/07/2002-05/09/2004
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/09/2004-01/11/2006
साढेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-09/09/2009
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-02/11/2014
अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/07/2022-24/03/2025

द्वितीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	25/05/2032-06/07/2034
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/07/2034-20/08/2036
साढेसाती तृतीय ढैया	20/08/2036-29/06/2039
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2041-02/12/2043
अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/02/2052-09/09/2054

तृतीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	05/07/2061-15/02/2064
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/02/2064-03/10/2065
साढेसाती तृतीय ढैया	03/10/2065-21/08/2068
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/10/2070-20/04/2073
अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/08/2081-09/03/2084

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	धन
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	पराक्रम हानि
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति सुख
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय

प्रथम चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	22/07/2002-05/09/2004
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/09/2004-01/11/2006
साढेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-09/09/2009
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-02/11/2014
अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/07/2022-24/03/2025

द्वितीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	25/05/2032-06/07/2034
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/07/2034-20/08/2036
साढेसाती तृतीय ढैया	20/08/2036-29/06/2039
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2041-02/12/2043
अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/02/2052-09/09/2054

तृतीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	05/07/2061-15/02/2064
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/02/2064-03/10/2065
साढेसाती तृतीय ढैया	03/10/2065-21/08/2068
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/10/2070-20/04/2073
अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/08/2081-09/03/2084

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	दम्पति
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बदनामी
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

kashish

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

AVNEET

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	जलचर	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मेष	मार्जार	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	चन्द्र	चन्द्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	कर्क	कर्क	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	30.00		

kashish का वर्ग मेष है तथा AVNEET का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर शत्रुता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार kashish और AVNEET का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

kashish मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

AVNEET मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

kashish तथा AVNEET में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

kashish का वर्ण ब्राह्मण तथा AVNEET का वर्ण भी ब्राह्मण है अतः यह मिलान अति उत्तम है। जिसके कारण दोनों के गुण, स्वभाव, आदतें, पसन्द एवं नापसंद सभी एक-समान होंगी। दोनों एक-दूसरे के बिल्कुल अनुरूप एवं अनुकूल साबित होंगे तथा दोनों हमेशा सामाजिक, व्यावसायिक एवं पारिवारिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन में एक-दूसरे की सहायता करेंगे।

वश्य

kashish का वश्य जलचर है एवं AVNEET का वश्य भी जलचर है अर्थात दोनों का वश्य समान ही है। जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। दोनों की शारीरिक स्थिति, स्वभाव, पसंद एवं नापसंद एक ही तरह के होंगे। दोनों के बीच अगाध प्रेम एवं सौहार्द बना रहेगा तथा समान दृष्टिकोण, व्यवहार एवं आपसी समझ होने के कारण एक-दूसरे के साथ सुखी जीवन व्यतीत करेंगे। ऐसा प्रतीत होगा कि दोनों एक-दूजे के लिए ही बने हुए हैं तथा एक-दूसरे के साथ का आनंद लेते रहेंगे। दोनों एक-दूसरे के कामों में मदद करते रहेंगे तथा परिवार की प्रगति एवं समृद्धि में महती योगदान देंगे।

तारा

kashish की तारा अतिमित्र तथा AVNEET की तारा सम्पत है। अतः दोनों की तारा अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह विवाह वैवाहिक जीवन एवं परिवार के लिए चहुंमुखी समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। साथ ही दोनों एक-दूसरे के लिए काफी भाग्यशाली साबित होंगे। kashish हमेशा AVNEET के साथ मित्रवत व्यवहार करता रहेगा तथा उसे असीम प्रेम एवं प्यार देता रहेगा। इनके बच्चे भी काफी बुद्धिमान, भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवं सफल होंगे।

योनि

kashish की योनि मेष है तथा AVNEET की योनि मार्जार है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का संबंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को सहयोग करेंगे। आपसी समझ एवं विश्वास की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में सभी कार्य आपसी सहमति से करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में अक्सर धन प्राप्ति के सुअवसर मिलते रहेंगे। आय के नये-नये स्रोत बनेंगे तथा अच्छी आय के साथ-साथ अच्छी जमापूंजी होगी तथा परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे के प्रति अपनापन महसूस करेंगे। परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा। साथ ही सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। इन दोनों से

उत्पन्न संतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में सफलता इनके कदम चूमेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन सुखमय जीवन ही रहेगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में kashish एवं AVNEET दोनों के राशि स्वामी समान हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि kashish एवं AVNEET दोनों के राशि स्वामी एक ही होने के कारण कुंडली मिलान में इसे अति उत्तम माना जाता है तथा पूरे 5 अंक प्रदान किए जाते हैं। जिसके कारण दोनों में असीम प्रेम बना रहेगा तथा साथ ही दोनों जीवन के हर क्षेत्र में एक-दूसरे का सहयोग करते रहेंगे। इनका प्रयास रहेगा कि वे स्वयं को आदर्श दम्पत्ति साबित कर सकें। इनके बच्चे योग्य, आज्ञाकारी, सफल एवं यशस्वी होंगे।

गण

kashish का गण देव तथा AVNEET का गण राक्षस है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसी परिस्थिति में AVNEET निर्दयी, निष्ठुर एवं क्रूर स्वभाव की हो सकती हैं जो वर, उसके बच्चों तथा परिवार के सदस्यों के लिए बुरा एवं घातक साबित हो सकता है। ऐसी पत्नी से अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह अपने पति, परिवार अथवा सामाजिक दायित्वों का अच्छी प्रकार से निर्वहन करेंगी। AVNEET की अक्सर दूसरों से लड़ाई-झगड़ा करना एवं लोगों को उकसाना इसी प्रकार की आदत होगी।

भकूट

kashish एवं AVNEET दोनों की राशि एक समान ही है इसलिये यह अति उत्तम मिलान है। ऐसा मिलान kashish एवं AVNEET तथा परिवार के चतुर्दिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है। इन्हें अनेक रूपों में ईश्वरीय कृपा जैसे - सौभाग्य, सम्पत्ति, समाज में मान-सम्मान तथा योग्य संतान आदि प्राप्त होगी।

नाड़ी

kashish की नाड़ी मध्य है तथा AVNEET की नाड़ी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह जीवन के लिए आवश्यक दो महत्वपूर्ण अवयवों का समन्वय है। अच्छे स्वास्थ्य, स्वस्थ काया एवं अच्छे यौन जीवन के लिए वात, पित्त एवं कफ का शरीर में संतुलन आवश्यक है। जिसके कारण kashish एवं AVNEET के बीच साहचर्य, सुख एवं समृद्धि की वृद्धि तथा उन्हें अच्छे, स्वस्थ एवं आज्ञाकारी संतान प्रदान होगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

kashish और AVNEET दोनों की राशि जलतत्व युक्त कर्क राशि है। अतः इनमें स्वभावगत समानताएं रहेंगी तथा जीवन भी आनंद पूर्वक व्यतीत होगा। उनमें परस्पर स्नेह सहानुभूति एवं आकर्षण का भाव भी विद्यमान रहेगा। अतः मिलान शुभ रहेगा।

kashish और AVNEET दोनों की राशि का स्वामी चन्द्रमा है। यह स्थिति सुखद दाम्पत्य जीवन के लिए अत्यंत ही शुभ मानी जाती है। इसके प्रभाव से kashish और AVNEET दोनों भावुक बुद्धिमान तथा आपस में सामंजस्य स्थापित करने वाले होंगे तथा प्रेम पूर्वक अपना वैवाहिक जीवन व्यतीत करेंगे। इनके जीवन मूल्य एवं सिद्धातों में समानता रहेगी अतः समय सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

kashish और AVNEET की राशियां परस्पर प्रथम भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से भविष्य की योजनाओं में इनको सफलता मिलेगी। यद्यपि AVNEET की महत्वाकांक्षाएं प्रबल नहीं होगी तथापि अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने में सफल रहेंगी। kashish और AVNEET निस्वार्थ भाव से एक दूसरे के प्रति सहयोग एवं समानता का भाव रखेंगे तथा एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे जिससे जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

kashish और AVNEET दोनों का वश्य जलचर है। अतः इसके प्रभाव से इनकी शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर पूर्ण समता रहेगी तथा अभिरूचियों में भी अनुकूलता रहेगी तथा एक दूसरे के प्रति पूर्ण आकर्षण तथा आत्मीयता का भाव रहेगा। साथ ही कामभावनाओं में भी एक दूसरे को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे जिससे दाम्पत्य जीवन की मधुरता बनी रहेगी ।

kashish और AVNEET दोनों का वर्ण ब्राह्मण है। अतः शैक्षणिक क्षेत्र शास्त्रीय विषय या धर्म संबधी कार्य कलापों में दोनों की रूचि रहेगी तथा कार्य क्षमता भी बराबर रहेगी। साथ ही जीवन के सिद्धांत एवं मूल्यों में भी एक रूपता रहेगी जिससे kashish और AVNEET का जीवन सुख शांति एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

धन

kashish का जन्म अतिमित्र तथा AVNEET का सम्पत नामक तारा में हुआ है। इसके प्रभाव से AVNEET एक धनवान तथा भाग्यशाली महिला होंगी तथा AVNEET के शुभ प्रभाव से उनकी आर्थिक स्थिति में नित्य वृद्धि होती रहेगी। भकूट का प्रभाव इनकी आर्थिक स्थिति पर सम रहेगा। अतः स्वपरिश्रम से ही इच्छित धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही मंगल का भी कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार kashish और AVNEET आरामदायक जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

kashish और AVNEET को लाटरी, सट्टे या अन्य स्रोतों से अनायास धन प्राप्ति की संभावना होगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के भौतिक संसाधनों का वे उपभोग करने में सफलता प्राप्त करेंगे। इसके अतिरक्त वे जायदाद तथा आभूषण आदि को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे।

स्वास्थ्य

kashish की नाड़ी मध्य तथा AVNEET की नाड़ी अंत्य है। अतः दोनों की अलग अलग नाड़ियां होने के कारण ये नाड़ी दोष से मुक्त रहेंगे। इसके प्रभाव से kashish और AVNEET दोनों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा परिश्रम एवं पराक्रम से वे अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को यथा समय सम्पन्न करने में समर्थ रहेंगे। इससे दाम्पत्य जीवन में खुशहाली तथा सन्तुष्टि बनी रहेगी। साथ ही मंगल का भी किसी के स्वास्थ्य पर कोई दुष्प्रभाव नहीं रहेगा। अतः उत्तम दाम्पत्य जीवन को व्यतीत करने की दृष्टि से यह मिलान अनुकूल रहेगा तथा kashish और AVNEET सुख एवं आनंद पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से kashish और AVNEET का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त kashish और AVNEET के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में AVNEET के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन AVNEET को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में AVNEET को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से kashish और AVNEET सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार kashish और AVNEET का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

AVNEET के सास से प्रायः अच्छे संबध रहेंगे। यद्यपि उनकी सास अन्य जनों के मामलों में कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत AVNEET के लिए अनुकरणीय हो सकते है। साथ ही इन दोनों के मध्य कोई विशेष समस्या या मतभेद नहीं

रहेंगे।

AVNEET अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवं सेवा भाव से ससुर को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही ननद एवं देवरों के साथ भी उनके संबध मित्रता पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण सहयोग एवं स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने में सफल रहेंगी।

इस प्रकार AVNEET के प्रति उनके सास ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीता से पूर्ण रहेगा तथा घर में उसे पूर्ण सुख सुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

kashish के अपनी सास से संबधों में मधुरता रहेगी तथा सास को वह अपनी माता के समान पूर्ण आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। वह उन्हें अपने पुत्र के समान समझेंगी तथा उसी प्रकार अपनत्व तथा वात्सल्य प्रदान करेंगी। साथ ही समय समय पर वे सपत्नीक सास से मिलने के लिए ससुराल जाते रहेंगे।

लेकिन ससुर के साथ में kashish के संबध अच्छे नहीं रहेंगे। इनकी आयु में अधिक अंतर के कारण वैचारिक तथा सैद्धांतिक मतभेद समय समय पर उत्पन्न होते रहेंगे। लेकिन यदि दोनों सामंजस्य की प्रवृति से कार्य लें तो मतभेदों में न्यूनता आएगी तथा मधुर संबधों में वृद्धि होगी। साथ ही साले एवं सालियों से भी संबधों में तनाव रहेगा तथा मानसिक स्तर पर विभिन्नता रहेगी जिससे एक दूसरे को वांछित सहयोग स्नेह एवं सहानुभूति अल्प ही प्रदान करेंगे। अतः इनको परस्पर सामंजस्य के भाव की स्थापना करनी चाहिए। इस प्रकार ससुराल पक्ष का दृष्टिकोण kashish के प्रति सामान्य ही रहेगा।

kashish

आपका जन्म आर्द्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में, मिथुन लग्न, कुंभ नवमांश एवं तुला के द्रेष्काण के उदयकाल में हुआ था। वर्तमान काल के प्रभाव से यह स्पष्ट होता है कि आपका व्यक्तित्व विचित्र विलक्षणता से युक्त है। कुछ काल के पश्चात् मिथुन प्रभाव से आप तानाशाही प्रवृति के हो जाएंगे। आप अपनी पत्नी/पति पर प्रभुत्व जमाएंगे। कुंभ नवांश के प्रभाव से यह चित्रित हो रहा है कि आपका स्वभाव विनम्र होगा। आप अपने कार्य-कलाप का ज्ञान मात्र अपने ध्यान में रख कर किस प्रकार कार्य संपादन किया जाए। उसी प्रकार नियम पूर्वक संपादित करेंगे।

निसंदेह आप अपना पारिवारिक जीवन शांति पूर्वक एवं आनंददायक ढंग से बिताना चाहते हैं। आप अपने निवास स्थान पर रह कर, अपने व्यवसाय संबंध स्थापित करना चाहते हैं। आप चाहते हैं कि आपकी पत्नी आपकी वासनात्मक प्रवृत्ति की अनदेखी कर दे। यदि जीवन संगिनी निष्ठुरता पूर्वक आपमें कुकृत्यों को प्रमाणित कर लें तथा उग्र रूप धारण कर ले। पुनः आप अपने चयनित जीवन को व्यवस्थित कर लेंगे, वही उत्तम होगा। इसके संबंध में आपको अधिक सावधानी पूर्वक व्यवहार करना चाहिए। अच्छी बात तो यह होगी यदि आप चाहते हैं कि मेरी धर्मपत्नी जीवन संगिनी सर्वोत्कृष्ट हो, तो आप उस राशि लग्न वालों के साथ संबंध स्थापित करें कि जिसका जन्म लग्न या राशि तुला मेष, सिंह अथवा कुंभ राशि का प्राणी हो। इस प्रकार की प्रवृत्ति आपके पारिवारिक जीवन को संतुलित रखने में सुनिश्चितता प्रदान करने में सहायक हो सकता है।

बहुधा आर्द्रा नक्षत्रीय प्राणी की प्रवृत्ति हिंसात्मक होती है और ये कृतघ्न हुआ करते हैं। ये अनैतिकता एवं दूसरों को पीड़ित करने की प्रवृत्ति को त्याग दें। अन्यथा इस प्रकार के रुझान को सुव्यवस्थित नही कर सके तो प्रोत्साहन के बिना सदैव ही बहुत अधिक धनोपार्जन की महत्वाकांक्षा समाप्त हो जाएगी।

मिथुन राशि का प्राणी निरंतर व्यग्र रहता है, यह एक आवश्यक विषय है। ये किसी भी विषय वस्तु की प्राप्ति हेतु विद्युत गति से कार्यरंभ करना चाहते हैं। ये अपनी योजना का कार्यान्वयन करते हैं। ये अपनी योजना का कार्यान्वयन करते ही शीघ्रता पूर्वक परिणम प्राप्त करना चाहते हैं। ये अपनी दिनचर्या, विधि एवं विधान के संपादन हेतु अपने समय का उपभोग नही कर पाते हैं। अनुकूल परिणाम प्राप्ति हेतु निश्चय पूर्वक अपनी नियमित आदतों के अनुसार व्यवसाय को परिवर्तितकर शीघ्रता पूर्वक लाभ प्राप्त करना चाहते हैं। ये किसी भी प्रकार को निश्चित कार्य या पद संभालने में तथा कार्यरूप देने में असमर्थ हो जाते हैं।

यदि ये इस प्रकार की अपनी बुरी आदतों को छोड़ दें तो मुख्यतः 26 वर्ष की आयु से अपने उज्जवल भविष्य की ओर अपने जीवन को अग्रसर कर सकते हैं। अर्थात् अच्छी प्रकार जीवन व्यतीत हो सकता है। मिथुन लग्न राशि प्रभावित प्राणी के लिए अनुकूल कार्य, सेवा

अथवा व्यवसाय के लिए पुस्तक संबंधी कार्य, विज्ञापन एवं प्रचार-प्रसार कार्य व्यवसाय अनुकूल है। यदि ये इनमें से कोई भी कार्य अपना लें तो वे पूर्णरूपेण उन्नतिशील एवं समृद्ध हो सकते हैं।

मिथुन राशि वालों को कुछ भयानक रोग जैसे स्वर भंग रोग, क्षय रोग, दमा आदि रोगों के विरुद्ध सतर्क एवं रक्षित रहना चाहिए। ऐसे व्यक्ति यदा-कदा मुर्छित हो जाते हैं। क्योंकि ये एकनिष्ट होकर कठिन श्रम करते-करते उत्तेजना पूर्वक जीवन बिताने लगते हैं। इन्हें बुद्धिमत्ता पूर्वक शांति ग्रहण कर पूर्ण रूपेण विश्राम एवं शयन करना चाहिए।

आपके लिए बुधवार, एवं शुक्रवार, का दिन अनुकूल हैं, तथा मंगलवार रविवार, गुरुवार एवं सोमवार का दिन कठिन एवं हानिप्रद प्रमाणित होगा। शनिवार मध्य फलदायक है। आपके लिए अंक 3 एवं 5 अंक शुभ एवं उत्तम है। अंक 8 एवं 4 अंक त्याज्यनीय है।

साथ ही लाल रंग एवं काले रंग को अस्वीकृत करें। यद्यपि रंग बैगनी, नीला हरा एवं पीला रंग आपके लिए अनुकूल एवं व्यवहारणीय है।

AVNEET

ज्योतिषीय आकृति से यह स्पष्ट हो रहा है कि आपका जन्म पूर्वाभाद्र पद नक्षत्र के चतुथ चरण में धनु लग्न में हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर धनु लग्न के साथ-साथ वृश्चिक राशि का नवमांश एवं सिंह राशीय द्रेष्काण भी उदित हुआ था। इसके प्रभाव से यह स्पष्ट सूचित हो रहा है कि आपका जीवन आरामदेह एवं प्रसन्नता प्रदायक होगा। प्रकृति ने आपको दृढ़ निश्चयी बना कर अपने जीवन हेतु प्रयत्नशील रहकर अपने स्वयं के लिए सहायक बनाया है।

धनु जन्म लग्न एवं सिंह द्रेष्काण का प्रभाव विभिन्न प्रकार के विषयों से संबंधित अनेक प्रकार के कर्म चिंतन का सामंजस्य पूर्ण व्यवस्था निरूपित करता है। परंतु वृश्चिक नवमांश के प्रभावानुरूप आप आक्रामक एवं असंगत प्राणी हो ऐसा प्रतीत होता है। आपका जीवन आरामदेह एवं प्रचूर धन संपत्ति से युक्त सुदृढ़-स्वस्थ्य जीवन का आनंद प्राप्ति का प्रतीक बताता है। परंतु बृश्चिक राशीय प्रभाव के अनुसार यह संभाव्य है कि आप गरीबी के जीवन में भी आ सकती हैं। अर्थात् आपका जीवन अभावग्रस्त एवं रोगगस्त भी हो सकता है। अतः आप अपने जीवन में उन्नति किस प्रकार करेंगी यह आपके कार्य एवं विचार शैली पर निर्भर करता है।

आप धन सम्पत्ति का उपार्जन कर निश्चित रूप से उसे सुरक्षित रखेंगी क्योंकि आप एक विशाल हृदय की प्राणी हैं। आप बहुत अधिक दान कर सकती हैं क्योंकि आप इस दान धर्म के लिए समर्थ प्राणी हैं। आप इस प्रकार के कार्य के ऊपर नियंत्रण रखेंगी। तब यह संभाव्य है कि आप शीघ्रतापूर्वक आनन्द लूटने के प्रलोभन में फंसकर उसका चिंतन करेंगी। आपको शान्तिपूर्वक अनर्थकारी कार्यक्रम के प्रति विपरीत आचरण करना चाहिए। आप को जूआ-सट्टा आदि गलत कार्यों का त्याग करना चाहिए।

आपके स्वास्थ्य के संबंध में विचारणीय यह है कि आप यात्रा अधिक करती हैं। इस कारणवश आपका स्वास्थ्य विकृत हो जाने की आशंका है क्योंकि आप असामयिक अधिक भोजन करती हैं। इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है कि आप स्वस्थ्य एवं प्रसन्न रह सकें। अन्यथा आप रोगादि की संभावना में पड़कर सर्दी, जुकाम, कफ, जुकाम, गठिया, वायु, रक्तचाप रोग से सामना कर सकती हैं।

आपको अपने परिवार का भली प्रकार भरण-पोषण करने के लिए आपमें यह योग्यता आवश्यक रूप से होना नितांत आवश्यक है कि आप किस प्रकार धन प्राप्त करके अपने परिवार का भरण-पोषण करेंगी। आप बहुत बड़ी विश्वासी है तथा सदैव आप विश्वसनीयता पूर्वक सत्याचरण करती हैं। तथा यह भी मानती हैं कि सत्य ही सब कुछ है। यह सन्देह है कि इन बातों का आप ध्यान नहीं रखती हैं कि इसका कोई प्रभाव अन्यों पर पड़ता है या नहीं। आप सदैव ईश्वर के प्रति श्रद्धावान होकर धार्मिक भावनाओं से युक्त होकर अनेक तीर्थ स्थानों का भ्रमण करेंगी तथा परोपकार हेतु दान प्रदान करेंगी।

आप कतिपय अच्छे कार्य व्यवसाय के प्रति अपनी अभिलाषा के अनुसार अपनी बुद्धि को अनुकूल कर सकती हैं। इनमें पुस्तक प्रकाशन, सम्पादन कार्य, शैक्षणिक संस्थान के संचालन का कार्य व्यवसायों का चयन कर सकती हैं।

आप निम्नांकित संभाव्य नियम के आधार पर अनुकूल कार्य शैली का सृजन कर सकती हैं।

आपके लिए अंकों में अंक 3, 5, 6 एवं 9 अंक अनुकूल हैं। इसके अतिरिक्त अंक 2, 7 एवं 9 अंक आपके लिए अनुपयुक्त हैं।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग सफेद, क्रीम, सूआ पंखी, नीला, हरा और नारंगी रंग आपके लिए अच्छा है। परंतु इसके अतिरिक्त रंग लाल, काला एवं मोतिया रंग आपके लिए अव्यवहारणीय है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में शुभ दिन रविवार, सोमवार एवं मंगलवारका दिन प्रतीत होता है। परंतु बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन आपके लिए अशुभफलदायी है।